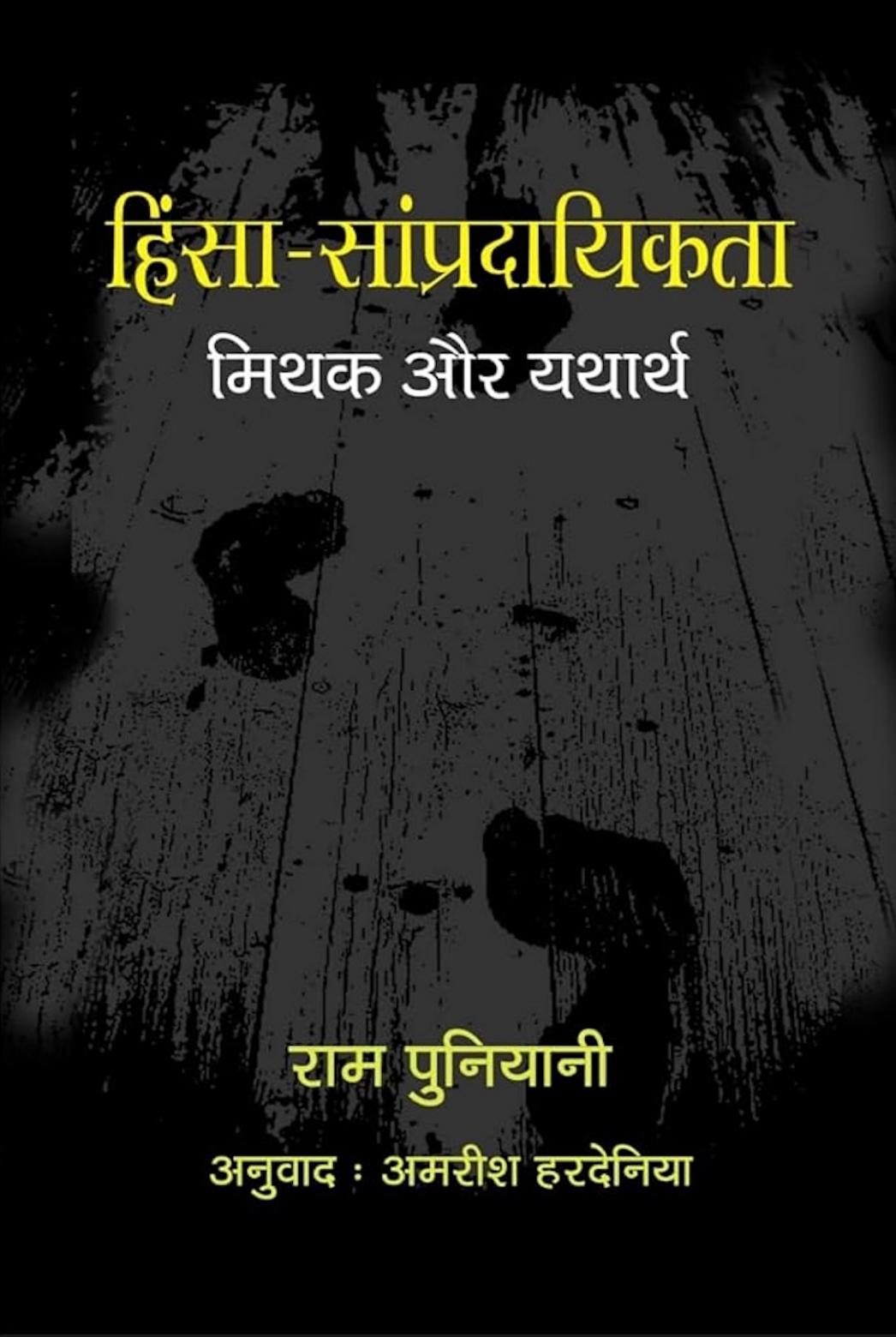
हिंसा-सांप्रदायिकता
मिथक और यथार्थ
राम पुनियानी
अनुवाद : अमरीश हरदेनिया

हिंसा-सांप्रदायिकता

मिथक और यथार्थ

राम पुनियानी

अनुवाद : अमरीश हरदेनिया

अगोरा

हिंसा-सांप्रदायिकता

मिथक और यथार्थ

विषय सूची

अध्याय 1

सांप्रदायिक हिंसा **9**

सांप्रदायिक हिंसा दो समुदायों के बीच टकराव के कारण होती है 11

हिंसा की शुरुआत मुसलमान करते हैं और अंततः वे ही अधिक संख्या में मारे जाते है 12

जाँच आयोगों ने दंगों के लिए दोनों समुदायों को दोषी ठहराया है 13

मुम्बई में सांप्रदायिक हिंसा मुसलमानों द्वारा शुरू की गई थी 15

मुम्बई में आयोजित महाआरतियाँ धार्मिक अनुष्ठान थीं 16

मुम्बई हिंसा में महाआरतियों की कोई भूमिका नहीं थी 17

गुजरात कत्लेआम के मूल में मुसलमानों द्वारा ट्रेन का जलाया जाना था 18

गोधरा हिंसा मुसलमानों की सुनियोजित योजना का नतीजा थी 19

ईसाई-विरोधी हिंसा मिशनरियों द्वारा धर्मपरिवर्तन की प्रतिक्रिया नहीं है 20

दंगे कुछ घटनाओं के कारण होते हैं 21

हिंसा अल्पसंख्यकों की हरकतों के कारण भड़कती है 22

अध्याय 2

अल्पसंख्यकों के सम्बंध में ग़लतफ़हमियाँ **23**

मुस्लिम राजाओं ने हिन्दुओं को अपमानित करने के लिए मंदिरों को जमींदोज किया 25

किसी हिन्दू राजा ने मंदिर नहीं तोड़े 27

टीपू सुल्तान ने हिन्दू मंदिरों का ध्वंस किया था 28

औरंगज़ेब हिन्दू-विरोधी था और उसने हिन्दू मंदिर नष्ट किए 29

ताजमहल पहले एक हिन्दू मंदिर था 30

बाबर ने राममंदिर का ध्वंस कर उस स्थान पर बाबरी मस्ज़िद बनवाई 31

बाबर हिन्दू-विरोधी था 32

अध्याय 3

राजाओं के बीच संधियाँ और युद्ध **33**

हिन्दू और मुस्लिम राजाओं की लड़ाइयों का मूल कारण था धर्म 35

शिवाजी मुस्लिम-विरोधी राजा था 36

हिन्दू-मुस्लिम युद्ध हमारे इतिहास का हिस्सा हैं 37

अध्याय 4

भारत में इस्लाम **39**

तलवार की नोंक पर अन्य धर्मों के धर्मावलम्बियों को मुसलमान बनाया गया 41

छुआछूत इस्लाम से अस्तित्व में आई 42

जाति प्रथा का हिन्दू शास्त्रों में प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था से कोई सम्बंध नहीं है 44

अध्याय 5

भारत की मिली-जुली संस्कृति **45**

भारतीय संस्कृति हिन्दू संस्कृति है 47

विभिन्न धर्मों के बीच टकराव है 48

सिक्ख धर्म हिन्दू धर्म का एक पंथ है 50

सिक्ख धर्म, इस्लाम से हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिए बनाया गया था 51

हिन्दुओं और मुसलमानों की भाषाएँ अलग-अलग हैं 53

हिन्दू और मुस्लिम एक दूसरे से दूर-दूर और एक दूसरे के प्रति उदासीन रहे 54

हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियाँ परस्पर विरोधी हैं 55

अध्याय 6

औपनिवेशिक काल **57**

भारत 1300 वर्षों तक गुलाम रहा 59

भारत एक हिन्दू राष्ट्र है 60

मुस्लिम और हिन्दू राष्ट्रवाद अपने-अपने धर्मों की रक्षा के लिए अस्तित्व में आए 61

गाँधी ने मुसलमानों का तुष्टिकरण किया 62

केवल मुसलमान ही कट्टर हैं 63
धर्म-आधारित राष्ट्र बनाए जा सकते हैं 64
मुसलमान, फतवों को कानून का दर्जा देते हैं 65

अध्याय 7
भारतीय राष्ट्रवाद 67
मोदी भारतीय राष्ट्रवादी हैं 69
विभाजन के लिए केवल
मुस्लिम लीग जिम्मेदार थी 70
मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा-आरएसएस
की विचारधाराएँ परस्पर विरोधी थीं 71
आरएसएस गैर-राजनीतिक संगठन है 72
सावरकर स्वाधीनता संग्राम सेनानी थे 74
भारतीय राष्ट्रवाद में आरएसएस का योगदान
और स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सेदारी 76
गोडसे का आरएसएस से कोई सम्बंध
नहीं था 78
गाँधीजी की हत्या में आरएसएस
की कोई भूमिका नहीं थी 80

अध्याय 8
कश्मीर मसला 83
कश्मीर समस्या इस्लाम एवं
मुसलमानों के कारण उत्पन्न हुई 85
कश्मीर की स्थिति मुसलमानों के
अलगाववाद के कारण और गम्भीर हो गई 87
पंडितों का पलायन यह दिखाता है कि
कश्मीर समस्या हिन्दू-मुस्लिम मसला है 88

अध्याय 9
वैश्विक आतंकवाद 89
सभी मुसलमान आतंकवादी नहीं हैं
लेकिन सभी आतंकवादी मुसलमान हैं 91
आतंकवाद की समस्या इस्लाम
के कारण पैदा हुई 92
आतंकवाद की जड़ें इस्लाम में हैं 93
आतंकवाद मुसलमानों के कारण बढ़ रहा है 94

अध्याय 10
वर्तमान समय में सांप्रदायिकता 97
टैगोर ने जन-गण-मन सम्राट जॉर्ज पंचम
की शान में लिखा था! 99
गोमांस खाने वालों और मरी हुई गायों
का व्यापार करने वालों पर हमला करना
उचित है! 101
सभी गोमांस व्यवसायी मुसलमान हैं 103
मुस्लिम संस्थाएँ लव जिहाद को
बढ़ावा देती हैं 104
मुसलमान, अन्य धर्मों की लड़कियों को
शादी करने के लिए फंसाते हैं 106
धार्मिक अल्पसंख्यक सुरक्षित हैं 107
भारत में मुसलमानों का
तुष्टिकरण किया जाता रहा है 109
मुसलमानों की जनसंख्या वृद्धि
के मूल में उनका धर्म है 110
मुसलमानों में बहुविवाह का प्रचलन
अधिक है 112
धर्मनिरपेक्षता, भारतीय समाज
के मूल्यों के विरुद्ध है 113
धर्मनिरपेक्ष राज्य का कोई विशिष्ट
लक्षण नहीं होता 114
मुसलमान मांसाहारी हैं इसलिए
वे अधिक हिंसक हैं 116
राष्ट्रगान गाना देशभक्ति का प्रतीक है! 117
बच्चों का नाम तैमूर के नाम
पर रखना अनुचित है 118
पुरस्कारों की वापसी आर्थिक एवं
राजनीतिक कारणों से की गई थी 120
विमुद्रीकरण काला धन समाप्त
करने के लिए किया गया था 121

अध्याय 11
शांति का मार्ग 123
स्वाधीनता आंदोलन के मूल्यों
को मजबूत करना होगा 125
धर्मनिरपेक्ष आंदोलन की जिम्मेदारियाँ 126

प्रस्तावना

भारतीय उपमहाद्वीप में सांप्रदायिक राजनीति का बोलबाला पिछले चार दशकों में बहुत बढ़ा है। सांप्रदायिक राजनीति और धर्म के नाम पर हिंसा के रूप में हमारे सामने है। इस हिंसा को भड़काने के लिए उस घृणा का इस्तेमाल किया जाता है जो तरह-तरह की गलतफ़हमियों के कारण पैदा होती हैं। 'यूनाइट इंडिया' (वॉट्सएप पुस्तिका) समाज में फैली भ्रांतियों का निवारण करने का छोटा-सा प्रयास है। अधिकतर भ्रांतियों की जड़ें मध्यकालीन इतिहास में हैं परंतु समकालीन सामाजिक मुद्दों का इस्तेमाल भी मिथकों और भ्रांतियों को गढ़ने के लिए किया जा रहा है। भ्रांतियों और उनके निवारण पर केंद्रित पुस्तकें बहुत कम हैं। हमने समाज में फैली कुछ बहुप्रचारित भ्रांतियों का निवारण, इतिहासविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लेखन के जरिए करने का प्रयास किया है। जिन पुस्तकों को हमने आधार बनाया है उनकी सूची अंत में दी गई है।

राम पुनियानी
सेंटर फॉर स्टडी ऑफ
सोसायटी एंड सेक्युलरिज़्म

अध्याय 1 : सांप्रदायिक हिंसा

सांप्रदायिक हिंसा दो समुदायों के बीच टकराव के कारण होती है

सांप्रदायिक हिंसा, दूसरे समुदाय के प्रति घृणा और नकारात्मक भावनाओं के कारण भड़कती है। यह घृणा, उन धारणाओं के कारण पनपती है जिनमें से ज्यादातर की जड़ में इतिहास की गलत समझ है। भारत में इन धारणाओं की जड़ में अंग्रेजों द्वारा किया गया सांप्रदायिक इतिहास लेखन है जो 'फूट डालो और राज करो' की उनकी नीति के अनुरूप किया गया था। सांप्रदायिक इतिहास लेखन में इतिहास को राजा के धर्म के चश्मे से देखा जाता है। जब अंग्रेजों ने देखा कि हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता (बहादुरशाह जफर, मंगल पाण्डे, झाँसी की रानी, तात्या टोपे आदि) बढ़ रही है तो उन्होंने इतिहास की पुस्तकों और अपनी नीतियों के माध्यम से फूट डालो और राज करो की प्रक्रिया को और तेज कर दिया। आगे चलकर सांप्रदायिक राष्ट्रवाद ने इतिहास के इस संस्करण को अपना लिया।

इस प्रकार का इतिहास, राजा के धर्म को केंद्र में रखता है। विभिन्न समुदायों को उनके धर्मों के राजाओं से जोड़कर देखा जाता है और 'दूसरों से घृणा करो' की भावना को भड़काया जाता है। यह घृणा ही उस हिंसा की जड़ में है, जो उन सांप्रदायिक राजनीतिक दलों द्वारा फैलाई जाती है, जो धर्म-आधारित राजनीति करते हैं। पाकिस्तान में (हिन्दुओं और ईसाइयों के विरुद्ध) यही प्रक्रिया अपनाई गई। यही बांग्लादेश में (हिन्दुओं और बौद्धों के विरुद्ध) और भारत में (मुसलमानों और ईसाइयों के विरुद्ध) हुआ। ये भ्रांतियाँ समाज की सामूहिक समझ का हिस्सा बन गई हैं।

हिंसा की शुरुआत मुसलमान करते हैं और अंततः वे ही अधिक संख्या में मारे जाते है

इस धारणा के पीछे वर्चस्वशाली वर्गों द्वारा किया गया दुष्प्रचार है। जिस तरह से सांप्रदायिक हिंसा की जाती है, उससे भी यह धारणा मजबूत होती है। उत्तर प्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक वीएन राय अपनी पुस्तक *कॉम्बेटिंग कम्युनल कन्फ्लिक्ट्स* में कहते हैं कि ऐसी स्थिति निर्मित कर दी जाती है कि मुस्लिम समुदाय पहला पत्थर फेंकने के लिए बाध्य हो जाता है। इसके बाद, इस हिंसा के बहाने वृहद स्तर पर प्रतिहिंसा प्रारंभ कर दी जाती है। तीस्ता सीतलवाड़, विभिन्न दंगा जाँच आयोगों की रपटों के चुनिंदा हिस्सों के अपने संकलन *हू कास्ट्स द फर्स्ट स्टोन, कम्युनिलिज़्म कॉम्बेट,* मार्च 1998 में इसी निष्कर्ष पर पहुँची हैं। सच यह है कि अधिकतर सांप्रदायिक दंगे, बहुसंख्यकवादी सांप्रदायिक ताकतों द्वारा भड़काए जाते हैं।